'बंद रास्तों के बीच' कहानी संग्रह में ग्रामीण जीवन

स्नेहलता शर्मा
शोधार्थी,
सी.एच. एम. कॉलेज, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई

सारांश

मिथिलेश्वर आज के युग के एक प्रसिद्ध कहानीकार है। इनकी अधिकतर कहानियों में आधुनिक भारत के गांवों का यथार्थ अंकित हैं । मिथिलेश्वर के कहानी - साहित्य में ग्राम्य जीवन की प्रामाणिक और जीवंत यथार्थ की अनुभूति मिलती है । कहानीकार ने गाँव के अन्तरंग में प्रवेश करने की कोशिश की है । लोकजीवन के विविध रंग, संकटग्रस्त पात्र, असुविधाग्रस्त शहर की ओर भागता हुआ मानव समाज , मोहभंग, नारी की दुर्दशा, ग्रामीण जन - जीवन की भयावह और जटिल रूप का उदघाटन किया है । आजादी के इतने वर्षों बाद भी ग्रामीण आर्थिक स्थिति में कोई अधिक सुधार नहीं है । प्रस्तुत कहानी संग्रह ' बंट रास्तों के बीच के माध्यम से शोधार्थी ने ग्राम्य - जीवन के प्रत्येक पहलू पर अपनी दृष्टि डाली है।

मुख्य शब्द: *शोषण, मजदूर, मोहभंग, खेत, स्त्री, आदि*

१. प्रस्तावना

'बन्द रास्तों के बीच' मिथिलेश्वर का दूसरा कहानी संग्रह है । इसका प्रकाशन सन् १ ९ ७८ में हुआ था । इस कहानी संग्रह में कुल दस कहानियाँ सग्रहीत हैं - नरेश बहू, आखिरी बार, सरे आम , पत्थर की लकीर, बन्द रास्तों के बीच, न चाहते हुए भी , शरीर से लाश तक, रात अभी बाकी है , पहली हँसी और बीच का आदमी । इन कहानियों में नारी उत्पीड़न तथा उनकी दयनीय दशा, आम लोगों की असुरक्षा, गाँव का विषाक्त माहौल, खेत मजदूरों की इच्छा-अभिलाषायें, उपेक्षित समाज की आजीविका से सम्बन्धित कठिनाइयाँ, नारी का यौन-शोषण , आर्थिक अभाव के कारण उत्पन्न समस्याएँ तथा वर्तमान मानवीय सम्बन्धों के खोखलेपन आदि सामाजिक विषयों को उठाया गया है ।

इस संग्रह की प्रथम कहानी 'नरेश बहू' नारी उत्पीड़न से सम्बन्धित है । पति और सास के अत्याचारों से तंग आकर नरेश बहू अपने घर से भाग जाती है । वह भाग कर जिस गाँव में जाती है उसी गाँव का नवयुवक वीरू उसकी रक्षा करता है । विरू के पिता विलासी हैं, उन्होंने भोग - विलास में अपनी सम्पूर्ण जायदाद गवां दी है । पत्नी की मृत्यू के बाद गाँव की ही एक बदचलन स्त्री के साथ वे रहने लगते हैं । वीरू इसी स्त्री की संतान है । पिता दुर्व्यवहारी होते हुए भी वीरू अंतीम सांस तक उनकी सेवा करता है । वीरू के रहते गाँव के मनचले नरेश बहू तक पहुँच नहीं सकते थे इसीलिए वे वीरू की हत्या कर देते नरेश बहू की नजर में वीरू के अलावा ऐसा कोई नहीं हैं जो उसकी रक्षा कर सके । वह गाँव के जामुन के पेड़ के नीचे बैठकर वीरू का इंतजार करती रहती है । इस तरह कहानी गावों में नारी जीवन की असुरक्षितता के साथ - साथ गाँवों में व्याप्त रूढ़ीवादिता को भी उजागर करती है । 'आखिरी बार' कहानी शहर और गाँव के भयावह माहौल को प्रस्तुत करती है । कहानी का नायक सरना गाँव की मुसीबतों से तंग आकर शहर भाग जाता है । उसे लगता है , शहर गाँव की अपेक्षा बह गाँव का माहौल और भी

घिनौना और भयावह हो गया है- "गाँव में चोरी - डकैती , बेईमानी , जानगारी अब पहले से बहुत अधिक बढ़ गई है। साल में तो तीन जानें जरूर मारी जाती हैं । तथा चोरियाँ , डकैतियाँ तो सैकड़ों होती हैं । लाज - शरम - इज्जत सब कुछ लोगों ने छोड़ दिये हैं , किसी भी तरह पेट भरना और पैसे जुटाना लोगों का धरम बन गया है ।"

'सरेआम ' कहानी नगरबोध से सम्पन्न है । कहानी उस भय और आतंक के माहौल को व्यक्त करती हैं , जो आज भी देश में सर्वत्र व्याप्त है । देश में आज भी हिंसा और आतंक का बोलबाला है । सरकार गुण्डागर्दी और आतंकवाद को मिटाने में असमर्थ है । देश के आम नागरिक का जीवन कहीं भी सुरक्षित नहीं है । कहानी में दो शिक्षित बेरोजगार नवयुवक साथ - साथ साक्षात्कारों में जाते हैं । दोनों में दोस्ती हो जाती है । एक दोस्त को बिहार राज्य परिवहन निगम में बुकिंग क्लर्क की नोकरी मिल जाती है । वह प्रयास करके अपने बेरोजगार मित्र को भी रिश्वत के बल पर कंडक्टर की नोकरी दिलवा देता है । एक दिन कंडक्टर गुण्डों के क्रोध का शिकार बन जाता है । वे उसे जान से मारने की धमकी देते हैं । वह अपनी रक्षा के लिए पुलिस थाने के पास कमरा लेता है , फिर भी उसकी हत्या हो जाती है । कहानी यह सवाल खड़ा करती हैं कि जब कानून के रखवालों के साये में रहकर भी आदमी सुरक्षित नहीं हैं तो वह किसके पास जायेगा ? ' पत्थर की लकीर ' चरित्र प्रधान कहानी है । कहानी का नायक बाबा हरदयाल सिंह सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधी न्याय का पक्षधर और प्रगतिशील विचारों का संवाहक है । उन्होंने गाँव में रहकर भी अपनी सामर्थ्य और अनुभव से जो किया है , वह पत्थर की लकीर की तरह चिरस्मरणीय है । गाँव की एक अछूत कन्या से विवाह कर उन्होंने समाज को चुनैती दी है , इसीलिए उन्हें घर से निकाल दिया गया है । गाँव में उन्होंने अलग से कुटिया बनाई है तथा आठ बीगहा जमीन में सुन्दर बगीचा बनाय । भयंकर बाढ़ आने के कारण बाबा हरदयाल की कुटिया पानी में डूब जाती है , उन्हें गाँव में कहीं भी शरण नहीं मिलती । उनकी पत्नी और नवजात शिशु दोनों सुरक्षित स्थान एवं सेवा - सुश्रुषा के अभाव में मर जाते हैं । बाबा हरदयाल क्रोध में अपने पिता का हाथ काट देते हैं और गाँववालों के भय से कही भाग जाते हैं । कई दिनों बाद वे निर्भिक होकर गाँव लौट आते हैं । गाँव में उन्हें सम्मान मिलने लगता है । गाँव की पंचायत में उनका ही वर्चस्व हो जाता है । इसतरह बाबा हरदयाल गाँववालों के लिए पत्थर की लकीर की तरह आदर्श बन जाते हैं । बाबा हरदयाल के अनुसार " जिन्दगी कुछ और नहीं अपने - अपने बूते और तजुर्बे से निर्माण की गई एक याददास्त होती है ।"

'बन्द रास्तों के बीच ' कहानी बनिहार जगेसर की त्रासदी को व्यक्त करती है । जगेसर गाँव का एक गरीब खेत मजदूर है । वह जब गाँववालों से सुनता है कि गाँव की कच्ची सड़क अब पक्की सड़क में तब्दील हो जायेगी और इसे शहर आने - जाने वाले मुख्य मार्ग से जोड़ा जायेगा , जिससे बसों का आने - जाने का सिलसिला शुरू हो जायेगा , तब उसने सड़क के किनारे की अपनी झोपडी को दूकान में तब्दील कर बनिहारी की नरकीय जिन्दगी से दूकानदार की बेहतर जिन्दगी का सपना देखा । उसने झोपड़ी तुडवाकर दुकान भी बनवायी , लेकिन सरकारी नियम के अनुसार वह दुकान तोड़ी जाती है । उसका मोहभंग हो जाता है । अपने दुकान के मलबे पर वह अपने को दम तोड़ते हुए महसूस करता है । ' न चाहते हुए भी ' कहानी उपेक्षित समाज के जीवन से सम्बन्धित है । इस समाज के लोग भालू नचाकर खेल दिखाने का काम करते हैं , जिनकी बहू - बेटियाँ वेश्यावृत्ति करने के लिए मजबूर है । न चाहते हुए भी उन्हें यह रास्ता चुनना पड़ता है । कभी - कभी उनकी बहु - बेटियाँ बलात्कार और यौन शोषण का शिकार भी हो जाती है । मदारी को अनाज चाहिए लेकिन गाँव के लोग उनका खेल देखकर जितना पैसा फेंकते हैं उनसे एक वक्त की रोटी भी नहीं मिल सकती । कहानी मदारी समाज की त्रासदपूर्ण जीवन को यथार्थता के साथ रेखांकित करती है । ' शरीर से लाश तक ' एक मजबूर , लाचार और गरीब लड़की की कहानी है । कहानी की नायिका एक कुँवारी लड़की है , जिसके माँ - बाप बूढ़े हो गये हैं और भाई किसी दुर्घटना के कारण अपाहिज बन गया है । अपने परिवार की आजीविका के लिए वह गाँव में घूम - घूम कर जलेबियाँ बेचती है । जलेबियाँ बेचते हुए उसे पुरूष की लिजलिजी वासना का शिकार होना पड़ता है । पढे - लिखे नैजवान भी उसकी मजबूरी और लाचारी

का फायदा उठाना चाहते हैं । उसे लगता है कि बिलासी पुरूषों की हवस की शिकार बनी न जाने कितनी कन्याओं को अपनी जिन्दगी को (शरीर को) लाश की तरह ढ़ोना पड़ता है ।

'रात अभी बाकी है ' कहानी स्वातंत्र्योत्तर गाँव में हो रहे शोषण , अशिक्षा , जनसंख्या विस्फोट, बेरोजगारी एवं गरीबी तथा उनसे उत्पन्न अपराध को रेखांकित करती है । गाँवों में परिवार नियोजन के अभाव में कई मध्य वर्गीय परिवार आज भी आर्थिक अभाव के कारण बदतर जिन्दगी जीने के लिए विवश है । इस सामाजिक सत्य को कथाकार ने निझावन नामक किसान के द्वारा स्पष्ट किया है । निझावन के पाँच बेटे और एक बेटी हैं । परिवार गरीबी से ग्रस्त है । सभी बेटे बेरोजगार हैं और धनाभाव के कारण परस्पर लड़ते रहते हैं । निझावन के बेटों की भी कई बेटें - बेटियाँ हैं । इसतरह परिवार बूरी तरह से आर्थिक संकट में फँसा हुआ है । बढती उम्र के कारण निझावन का स्वास्थ ठीक नहीं रहता है । उसका बडा बेटा सुरेश बीमार हो जाता है तथा दवा के अभाव में उनकी मृत्यू हो जाती है । एक बेटा चोरी में पकड़ा जाता है । इसतरह सम्पूर्ण परिवार अस्त-व्यस्त हो जाता है । 'पहली हँसी 'कहानी साहित्यकारों के अर्थाभाव से भरी जिन्दगी को व्यक्त करती है । कहानी का नायक एक कहानीकार है, जो बी.ए. ऑनर्स होकर भी बेकार है । कहानियाँ लिखने से उसका पेट नहीं भरता । इसीलिए वह सोचता है कि कहानी प्रतियोगिता हेतु कहानी भेजने के बजाय वह स्वयं ही वहाँ जाए । इस बात पर वह दिनभर में पहली बार हँसता है। 'बीच का आदमी' कहानी मध्यवर्ग की व्यक्तिवादी एवं स्वार्थी मनोवृत्ति का पर्दाफाश करती है । एक ट्रक में सफर कर रहे सभी यात्रियों से जब ट्रकवाले किराया वसूल करने लगते हैं तो एक नौजवान स्वयं को विद्यार्थी बता कर मुक्त में यात्रा करने की सोचता है । यात्रियों में से एक आदमी किराया ज्यादा माँगे जाने पर ट्रकवाले का विरोध करता है , तो युवक ट्रकवाले का पक्षधर बन जाता है । शोषितों का पक्ष लेने की बजाय वह शोषक का साथ देकर सुविधा भोगी बनता है । इसतरह इस संग्रह की सभी कहानियाँ गाँव की जिन्दगी की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करती है । साथ ही देश में व्याप्त हिंसा और आतंक के खतरनाक माहौल से पाठकों का परिचय कराती है।

२. निष्कर्ष

अतः हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत कहानी संग्रह के दवारा लेखक ने गांवों के बदलते हुए परिवेश को अंकित किया है ग्रामीण नारी जीवन आज भी असुरक्षित और उत्पीड़ित हैं ।गांवों के लोग शहरों की चकाचौंध से आकर्षित होकर गांवों से पलायन कर रहे हैं और अंत में निराशा ही हाथ लगती है । इस कहानी संग्रह में लेखक ने आजादी के बाद गांव में हो रहे शोषण , अशिक्षा, जनसंख्या विस्फोट एवं गरीबी तथा उनसे उत्पन्न अपराध को रेखांकित किया है

संदर्भ सूची

१. सोवियत लैंड नेहर पुरस्कार ' बंद रास्तों के बीच कहानी संग्रह के लिए ,१ ९ ७ ९ ॥
२. यशपाल पुरस्कार - उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा निर्णय कहानी संग्रह केलिए , सन् १ ९८१-८
३. अमृत पुरस्कार, निखिल भारत बंग साहित्य सम्मेलन द्वारा लेखक के लिए , सन् १ ९ ८३
४. साहित्य की सामाजिकता, मिथिलेश्वर , पृ . १०७
५. साहित्य की सामाजिकता, मिथिलेश्वर , पृ . ९ ५
६. नेपथ्य की बात, एक थे प्रो . बी. लाल, मिथिलेश्वर , पृ . ११
७. साहित्य की सामाजिकता, मिथिलेश्वर , पृ . १५६
८. नेपथ्य की बात, एक थे प्रो . बी. लाल, मिथिलेश्वर , पृ . ०८
९. साहित्य की सामाजिकता, मिथिलेश्वर , पृ . १५५